''राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका''

डॉ. मीना शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
बीकॉन इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मेरठ (उ.प्र.)

सारांशिका

राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समस्त भौतिक सुविधाएं प्राप्त होना आवश्यक है। मनुष्य को अच्छा नागरिक बनाने के लिए उदार शिक्षा की आवश्यकता होती है और उनमें आर्थिक एवं भौतिक विकास करने के लिए उदार शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा दोनों प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता होती है और इन दोनो में भी व्यावसायिक शिक्षा का महत्व अधिक है। व्यावसायिक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसके द्वारा मनुष्य को उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन अथवा वितरण संबन्धी कार्यो तथा अन्य किसी व्यवसाय में निपुण किया जाता है, जिससे वे अर्थोपार्जन कर अपनी जीविका चलाते हैं। यह शिक्षा बच्चों को उनकी अपनी योग्यता, अभिक्षमता और उनकी रूचि के अनुसार दी जाती है। वर्तमान में व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में उत्पादन वितरण एवं अन्य व्यवसाय जैसे कृषि राजनीति, खेल शिक्षा, चिकित्सा, वकीलों की शिक्षा आदि राष्ट्र निर्माण के लिए व्यावसायिक शिक्षा का विकास किया जाना आवश्यक है। आदिकाल में देखते हैं तो मानव शिकार द्वारा पेट भरता था, पेड़ों की छाल से शरीर ढकते थे, पहाड़ों की गुफाओं में रहते थे तब हम अपनी संतानों को इसी प्रक्रिया में प्रशिक्षित करते थे। आगे चलकर हम खेती और पुशपालन की शिक्षा देने लगे। आज हम अपनी जीविका चलाने के लिए अनेक उत्पादन एवं औद्योगिक कार्य करते हैं।

मुख्य शब्दः राष्ट्र निर्माण, राजनीतिक व्यवस्था, व्यावसायिक शिक्षा, चेतना।

इस विषय पर विचार करने पर सर्वप्रथम भारत के सन्दर्भ में राष्ट्र निर्माण को समझना आवश्यक है। राष्ट्र शब्द का क्या अर्थ हैः– प्रायः राष्ट्र शब्द का प्रयोग राज्य के संदर्भ में किया जाता है, परन्तु मौलिक रूप से भिन्न है। राष्ट्र का स्वरूप आध्यात्मिक एवं चेतना संबन्धी है यह रूप आध्यात्मिक संगठन है और उसका आधार भावात्मक एकता है दूसरी ओर राज्य एक मौलिक संगठन है यह पूर्णतया राजनीतिक व्यवस्था है। और उसमें मानवीय आवश्यकताओं का मूल रूप देखने को मिलता है। दूसरा राष्ट्र के निर्माण के लिए कोई निश्चित तत्व नहीं होते है, जबकि राज्य के 4 अनिवार्य तत्त्व जनसंख्या, भूमि, सरकार व सम्प्रभुता। इन चार तत्वों से राज्य का निर्माण हो जायेगा। राष्ट्र के विषय में यह बात नहीं है। राष्ट्र का निर्माण करने वाले अनेक तत्व होते हैं और जो समयानुसार बदलते रहतें हैं। यदि किसी राज्य में राष्ट्रीय भावना नहीं है तो वह भी राज्य में रह सकता है परन्तु वह राष्ट्र नहीं बन सकता। सामान्यतः राष्ट्र निर्माण से अर्थ राष्ट्र के आर्थिक विकास से लिया जाता है परन्तु वास्तव में इससे कुछ भिन्न अर्थ होता हैं। राष्ट्र तो अमूर्त सम्प्रत्यय है उसके मूर्त अंग तो प्राकृतिक सम्पदा और उसके नागरिक हैं। जब हम राष्ट्र निर्माण की बात करते हैं तो उस से हमारा तात्पर्य उसके समस्त नागरिकों के निर्माण से होता है और नागरिकों के निमार्ण से उनके बहुमुखी विकास, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं चारित्रिक और व्यवसायिक विकास से होता है। उसमें राष्ट्रीय एकता की भावना और अर्न्तराष्ट्रीय अवबोध के विकास से होता है जिसमें वे साधन सम्पन्नता के साथ–साथ सुख शान्ति से जीवन यापन करें। भारतीय लोकतंत्र संदर्भ में समाजवाद एवं धर्मनिरपेक्षता की प्राप्ति भी आती है। इन सबका एक ही लक्ष्य है, सुख शान्ति पूर्ण जीवन की प्राप्ति। सच्चे राष्ट्र का निर्माण तभी संभव हो सकता है जब भौतिक रूप से सम्पन्न हो। राष्ट्र के समस्त नागरिकों का आर्थिक विकास हो और सम्पन्न एवं सुख शान्ति जीवन व्याप्त कर सकें।

राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समस्त भौतिक सुविधाएं प्राप्त होना आवश्यक है। मनुष्य को अच्छा नागरिक बनाने के लिए उदार शिक्षा की आवश्यकता होती है और उनमें आर्थिक एवं भौतिक विकास करने के लिए उदार शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा दोनों प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता होती है और इन दोनो में भी व्यावसायिक शिक्षा का महत्व अधिक है। व्यावसायिक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसके द्वारा मनुष्य को उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन अथवा वितरण संबंधी कार्यों तथा अन्य किसी व्यवसाय में निपुण किया जाता है, जिससे वे अर्थोपार्जन कर अपनी जीविका चलाते हैं। यह शिक्षा बच्चों को उनकी अपनी योग्यता, अभिक्षमता और उनकी रूचि के अनुसार दी जाती है। वर्तमान में व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में उत्पादन वितरण एवं अन्य व्यवसाय जैसे कृषि राजनीति, खेल शिक्षा, चिकित्सा, वकीलों की शिक्षा आदि राष्ट्र निर्माण के लिए व्यावसायिक शिक्षा का विकास किया जाना आवश्यक है। आदिकाल में देखते हैं तो मानव शिकार द्वारा पेट भरता था, पेड़ो की छाल से शरीर ढकते थे, पहाड़ों की गुफाओं में रहते थे तब हम अपनी संतानों को इसी प्रक्रिया में प्रशिक्षित करते थे। आगे चलकर हम खेती और पुशपालन की शिक्षा देने लगे। आज हम अपनी जीविका चलाने के लिए अनेक उत्पादन एवं औद्योगिक कार्य करते हैं। अतः जीविकोपार्जन का उद्देश्य व्यावसायिक उद्देश्य कहलाता हैं। आज के परिपेक्ष्य में शारीरिक, समाजिक विकास सबसे पहली आवश्यकताएँ हैं रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यावसायिक शिक्षा की उपयोगिता आज के युग में और भी अधिक हो गयी हैं अतः शिक्षा के द्वारा बालक का शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक, नैतिक, चारित्रिक और व्यावसायिक सभी प्रकार का विकास आवश्यक है।

स्वतंत्रता प्राप्त करने के साथ ही यह अनुभव किया जाने लगा, कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सामाजिक सेवाओं का निरन्तर विस्तार आवश्यक हैं इन कार्यो को सम्पादित करने के लिए सरकार को पर्याप्त मात्रा में अध्यापकों, डाक्टरों, इंजीनियरों, यंत्र चालकों तथा छोटे–मोटे कार्यों के लिए अन्य सुशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। इसके लिए आवश्यक है विश्वविद्यालय की तथा वैज्ञानिक

और यांत्रिक शिक्षा की सुविधाओं का निरन्तर विस्तार हो तथा अन्य अनुसंधान के कार्यो में प्रगति हो। राष्ट्र हित में सभी योजनाएं तथा कार्यक्रम तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक कि राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सुशिक्षित और कुशल व्यक्तियों का एक बड़ा दल तैयार नहीं हो जाता।

राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में व्यावसायिक शिक्षा की अहम भूमिका है। आम शिक्षा की अवधारणा मात्र बौद्धिक उपलब्धियां प्राप्त करना नहीं है, वरन् उसका उद्देश्य एक खुशहाल समृद्धशाली मानव शक्ति का निर्माण करना है। शिक्षा का सम्बन्ध जीविकापार्जन से जुड़ गया है। शिक्षा की आधुनिक अवधारणा जीवनोपयोगी रोजगार परक शिक्षा है। व्यापक रूप से व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत उन सब प्रकार की शिक्षा को सम्मिलित किया जा सकता है, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है। आज से 50 वर्ष पूर्व हुमायूँ कबीर ने अपने एक लेख में विश्व के कुछ प्रमुख देशों के उदाहरण देकर तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के महत्व तथा आवश्यकता को प्रमाणित किया। उन्होंने लिखा : ''किसी राष्ट्र की समृद्धि का प्रमुख आधार विज्ञान एवं प्राविधिक विषयों की शिक्षा है। यदि किसी देश में इस शिक्षा की सफल एवं समुचित व्यवस्था है और यदि यह शिक्षा प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, तो उस देश की प्रगति भी अवश्यंभावी है। संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, जर्मनी, जापान इनके सजीव उदाहरण हैं। सौ वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका एक पिछड़ा और अविकसित देश था, परन्तु तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा का उत्कृष्ट आयेाजन एवं उत्तरोत्तर उत्थान करने के कारण आज वह संसार का सबसे धनी देश है। सन् 1917 ई० में जब रूस में ज़ारशाही का जनाजा निकल कर गणतंत्र को प्रतिष्ठित किया गया तब उसका स्थान संसार के निर्बल एवं अप्रगतिशील देशों में था, परन्तु प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा का सुन्दर नियोजन करने के कारण आज उसका स्थान सबल एवं सुदृढ़ देशों में है।

द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी और जापान को जर्जर बनाकर उसकी अर्थव्यवस्था को तहस–नहस कर दिया, परन्तु उन्होंने प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के विकास कि लिए जी जान से मेहनत करके अपनी पूर्ण स्थिति को पुनः प्राप्त कर लिया हैं ये उदाहरण इस बात के सजीव प्रमाण है, कि किसी राष्ट्र के निर्माण में तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा का कितना महत्व है। पंडित जवाहर लाल नेहरू भारत में औद्योगिक के विकास के लिए विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी के समर्थक थे। बड़ी–बड़ी वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं और विज्ञान केन्द्र सब नेहरू जी की ही देन है। पं. नेहरू ने वैज्ञानिक तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा हेतु अंग्रेजी भाषा का समर्थन किया। वे इस शिक्षा के मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं को दूर करना चाहते थे एवं ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे, जो वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टि से अपनी अलग पहचान रखता हो। स्वतंत्रता से पूर्व ही सन् 1939 ई. में भारतीय राष्ट्रीय आयोग में पंडित नेहरू की अध्यक्षता में एक राष्ट्र योजना समिति का गठन किया जिसका उद्देश्य राष्ट्र शिक्षा नीति के माध्यम से भारत में वैज्ञानिक वातावरण बनाना था जिससे देश में विज्ञान तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा मिल सके। पं. नेहरू ने स्वतंत्रता से पूर्व ही देश की प्रगति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जीवन के हर क्षेत्र में अपनाने पर बल दिया था। उनका यह मानना था कि हमारा देश तब तक प्रगति नहीं कर सता जब तक हमारी जनता का दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं बन जाता।

अतः उन्होंने व्यावसायिक शिक्षा के महत्व पर विशेष बल देने की बात रखी। 17 फरवरी 1948 ई. को संविधान सभा में उन्होंने कहा मेरे विचार से ''विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी की प्रगति इतनी तीव्र है, कि 15 वर्ष की अल्प अवधि में आधुनिक उधोग प्रक्रिया में पूर्ण परिवर्तन हो जायेगा ऊर्जा के स्त्रोत खोजें जायेंगे और यह स्त्रोत आधुनिक उत्पादन प्रक्रिया को बदल देगें। उन्होने यह स्पष्ट किया कि यदि सामान्य जनता में लाभ पहुँचाना है तो वैज्ञानिक तरीके से औद्योगीकरण करना होगा एक स्थान पर उन्होंने यह भी कहा कि मैं औद्योगीकरण और बड़ी मशीनों पर विश्वास करता हूँ और सारे हिन्दुस्तान में फैक्ट्रियां खुल जाना पसन्द करूँगा।'' उनका यह दृढ़ विश्वास था कि जब तक तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के मार्ग की बाधाओं को दूर नहीं किया जाता तो इसका विकास संभव नहीं हैं।

इस प्रकार देश को आत्म निर्भर बनाने व उसे विकसित करने में नेहरू ने वैज्ञानिक तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया यह इस बात का प्रतीक है कि हमारे विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय में शिक्षा प्राप्त कर रहें है। इसके विकास में मुख्यतः विश्वविद्यालयों व विशिष्ट तकनीकी संस्थाओं में शिक्षा का स्वरूप ही महत्वपूर्ण है। 1939 व 1953 नरेन्द्र देव समीति द्वारा सम्पूर्णानन्द, काठारी आयोग, शिक्षा आयोग द्वारा प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये गए।

स्वतंत्र भारत में डा0 सम्पूर्णानन्द ने विज्ञान के छात्रों तथा वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे ज्ञान का समुचित प्रयोग जनहित में करें। उन्होने देश की समस्याओं की ओर इंगित करते हुए कहा कि बड़े भूभाग जो आज बंजर पड़े हैं थोड़े से प्रयत्न से लहलहाते शस्यश्यामलं क्षेत्रों में परिवर्तन किये जा सकते हैं। बहुत से रोग जिन्हें हमारी जलवायु और आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों में खासतौर से पनपने का अवसर मिल पाता है उनके उन्मूलन का एकमात्र उपाय साधन है। उसी प्रकार दुर्भिक्षवाद अकाल मृत्यु के विरूद्ध संग्राम छेड़ना है। जनता की जीवन शक्ति बढ़ानी है, स्वास्थ्य और कम थकान वाले काम के तरीके खोजने है। उनसे अर्जित शक्ति व आय बढ़ानी है इन सब कार्यों में सहायता के लिए हम विज्ञान की ओर दृष्टि लगानी हैं। डा० सम्पूर्णानन्द के अनुसार भारत जैसे कृषि प्रधान देश में ऋतुविषयत अथवा वर्षा, वायु आय संबंधी विज्ञान का ज्ञान व्यवहारिक दृष्टि से आवश्यक है। अतः वैज्ञानिक दृष्टि से ऋतु संबन्धी पूर्ण सूचनाओं का अध्ययन करे व किसानों को उपलब्ध करायें परन्तु उन्होने यह भी कहा कि ज्ञान सुपात्र को ही देना चाहिए जो कि उसके योग्य है।

आज पूरा विश्व विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के बल पर विकसित हो रहा है आज विज्ञान व टेक्नोलॉजी का युग है और केवल वैज्ञानिक साधनों के उपयोग से ही हम अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते है। निर्धनता, बीमारी, निरक्षरता कृषि उद्योग–धन्धों का वैज्ञानिक संगठन हो इस प्रकार उच्च नागरिकों का निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में व्यावसायिक शिक्षा की अहम भूमिका है।

संसार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए आवश्यक है, कि हम अपने देश में नागरिकों कों किसी उत्पादन कार्य अथवा किसी व्यावसायिक की शिक्षा दें। राष्ट्र निर्माण के लिए प्रमुख संसाधनों के समाधान देश व बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करने के लिए भी व्यावसायिक शिक्षा की अति आवश्यकता है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की कुंजी है लेकिन जरूरी नहीं कि इससे जो बदलाव आते है वे वांछनीय हों, सामाजिक बदलाव और सामाजीकरण के एक औजार के रूप में शिक्षा लोगों में मूलबोध उत्पन्न करने के लिए भी उत्तरदायी हैं। हमारे देश में शिक्षा रोजगार और आर्थिक विकास के अंर्तसम्बन्धों को विभिन्न राज्यों के आंकड़ों पर सरसरी तौर पर नजर दौड़ा कर देखा जा सकता है। जम्मू कश्मीर राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, असम जैसे राज्य में जहां साक्षरता का स्तर और शिक्षा पर प्रति व्यक्ति निवेश अपेक्षाकृत कम है वहाँ प्रति व्यक्ति आय का स्तर कम है और बेरोजगारी का स्तर अधिक है। इसके विपरीत केरल, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, कर्नाटक जैसे राज्यों मे साक्षरता का शिक्षा पर प्रति व्यक्ति खर्च का स्तर अपेक्षाकृत अधिक होने में प्रति व्यक्ति आमदनी अधिक और बेरोजगारी कम है। बेरोजगारी की समस्या, जनसंख्या, दूषित पर्यावरण, पिछड़पन, अलगाववाद आदि समस्याओं का समाधान का एक उपाय शिक्षा का व्यावसायीकरण है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर बल दिया गया था, परन्तु इसका विकास तीव्र गति से नहीं हुआ। इक्कीसवीं सदी की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार में तेजी लाने का लक्ष्य है, साथ ही व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण, विभिन्न कौशलों के विकास पर बल दिया गया है। अतः गाँधी जी की बुनियादी तालीम की अवधारणा के अनुरूप सबके लिए प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था और शिक्षा का व्यावसायीकरण द्वारा एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण संभव है।

संदर्भ सूची

- जर्नल्स
- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ
- इन्टरनेट
- सोशल प्लेटफॉर्म।